POLITICAL SCIENCE Dep.
B.A. Part-I (Hons) Paper-II
Dr. Husna Afia
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College Tajpur
Samastipur

महात्मा गांधी और सविनय अवज्ञा आंदोलन का विस्तार

सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रारंभिक चरण के रूप में गांधीजी ने डांडी में मुट्ठीभर नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा। अनेकों भारतीयों ने सरकारी सेवाओं से त्यागपत्र दे दिया। तमिलनाडु में तंजौर के वेदारण्यम तट पर सी. राजगोपालाचारी ने नमक यात्रा की; मालाबार में के. केलप्पन ने नमक पदयात्रा का आयोजन किया। उड़ीसा में गोपालबंधु चौधरी, एक गांधीवादी नेता के अंतर्गत नमक सत्याग्रह आयोजित हुआ, बंगाल में सुभाष चंद्र बोस, जे. एम. सेनगुप्ता के नेतृत्व में, बिहार के पटना में अम्बिका कांत सिन्हा के नेतृत्व में नमक बनाने के लिए नवाब तालाब को चुना गया तथा नमक कानून तोड़ा गया। बिहार में चौकीदार कर के विरोध में तथा चौकीदारों और चौकीदारी पंचायत के प्रभावशाली सदस्यों के इस्तीफे की मांग को लेकर जबरदस्त आंदोलन चलाया गया। पेशावर में खान अब्दुल गफ्फार खान के नेतृत्व में आंदोलन चला। खान अब्दुल गफ्फार खान ने, जिन्हें 'बादशाह खान' या 'सीमांत गांधी' के नाम से भी जाना जाता है, 'खुदाई खिदमतगार' नामक स्वयंसेवी संगठन की स्थापना की। इसे 'लाल कुर्ती'

Scanned with CamScanner

के नाम से भी जाना जाता है। इसने मजदूरों की दशा में सुधार की मांग की। संगठन ने अहिंसा के सिद्धांत को सर्वोपरि मानते हुए राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नमक सत्याग्रह में सबसे तीव्र प्रतिक्रिया धारासणा में हुई। यहां सरोजनी नायडू, इमाम साहब के नेतृत्व में धारासणा नमक कारखाने पर आंदोलनकारियों ने धावा बोल दिया। यद्यपि आंदोलनकारियों ने पूर्ण शांति के साथ विरोध प्रदर्शन किया किन्तु पुलिस ने दमन का सहारा लिया तथा बर्बरतापूर्वक लाठी चार्ज किया।

यद्यपि 4 मई 1930 को गाँधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया था परन्तु आंदोलन अन्य नेताओं के नेतृत्व में जारी रहा। अन्ततः जुलाई 1930 में भारत के तत्कालीन वायसराय ने गोलमेज सम्मेलन का प्रस्ताव रखा तथा डोमिनियन स्टेटस की मांग पर चर्चा करने के मुद्दे को इसका लक्ष्य घोषित किया। 25 जनवरी 1931 को गांधीजी तथा कांग्रेस के अन्य प्रमुख नेता बिना शर्त कारावास से रिहा कर दिए गए।

Scanned with CamScanner